

अध्याय 14

एक बुढ़िया

प्रश्न-अभ्यास

नाम बताओ, काम बताओ

प्रश्न 1.

बिना नामवाली बुढ़िया का कोई नाम रखो।

उत्तर :

कलावती देवी।

प्रश्न 2.

वह दिनभर खाली रहती थी। उसके लिए कुछ काम सुझाओ।

उत्तर :

- वह बच्चों को कहानियाँ सुना सकती थी।
- वह पेड़-पौधों की देखभाल कर सकती थी।
- वह पुस्तकें पढ़ सकती थी।
- “वह पूजा-पाठ कर सकती थी।
- वह घर की सफाई कर सकती थी।
- “वह चावल-दाल बीन सकती थी।

काम करो’ कुछ काम करो

प्रश्न 3.

तुम्हारे घर में सबसे ज्यादा काम कौन करता है?

उत्तर :

मम्मी पापा

प्रश्न 4.

तुम्हारे घर में सबसे ज्यादा आराम कौन करता है?

उत्तर :

दादी जी दादा जी

दो अंक के प्रश्न और उत्तर

1. प्रश्न: इस कविता का शीर्षक और रचयिता कौन है?

उत्तर: इस कविता का शीर्षक 'एक बुढ़िया' है और रचयिता निरंकारदेव 'सेवक' है।

2. प्रश्न: बुढ़िया के पास काम क्यों नहीं था और इसके क्या परिणाम हुए?

उत्तर: बुढ़िया के पास काम नहीं था, इसलिए वह दिनभर खाली रहती थी और कोई काम नहीं करती थी। काम न रहने से उसे आराम भी नहीं था और थक जाती थी।

3. प्रश्न: बुढ़िया की दिनचर्या कैसी थी और उसे कैसा आराम नहीं मिलता था?

उत्तर: बुढ़िया की दिनचर्या खाली रहने के कारण सुबह, दोपहर, शाम और रात सब बराबर थी। काम न होने के कारण उसे आराम नहीं मिलता था।

4. प्रश्न: कविता में बुढ़िया के जीवन का कैसा वर्णन है?

उत्तर: कविता में बुढ़िया के जीवन का वर्णन सुनसान, ऊब, और कामहीन होने का है, जिससे उसका जीवन थका-हारा हुआ लगता है।

5. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन का क्या संदेश है?

उत्तर: बुढ़िया के जीवन से हमें यह सिखने को मिलता है कि कामहीनता और आलस्य इंसान के जीवन को उबारते हैं और इंसान को सकारात्मक दिशा में बदलने का प्रेरणा देते हैं।

6. प्रश्न: इस कविता के अंतर्गत कौन-कौन सी भाषा और अंदाज का प्रयोग किया गया है?

उत्तर: इस कविता में बुढ़िया के जीवन को बयान करते समय साधारित और सामान्य भाषा का प्रयोग किया गया है जो सुन्दरता और गहराई के साथ है।

चार अंक के प्रश्न और उत्तर

1. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन की कैसी दिनचर्या थी और उसे कैसा आराम नहीं मिलता था?

उत्तर: बुढ़िया की दिनचर्या खाली रहने के कारण सुबह, दोपहर, शाम और रात सब बराबर थी। काम न होने के कारण उसे आराम नहीं मिलता था और वह थकी-हारी रहती थी।

2. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन में क्यों था उबारते वक्त आलस्य और ऊब की भावना?

उत्तर: बुढ़िया के जीवन में उबारते वक्त आलस्य और ऊब की भावना थी क्योंकि उसके पास कोई काम नहीं था, जिससे वह खाली रहती थी और उसे आराम नहीं मिलता था।

3. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन से हमें क्या सिखने को मिलता है?

उत्तर: बुढ़िया के जीवन से हमें यह सिखने को मिलता है कि कामहीनता और आलस्य इंसान के जीवन को उबारते हैं और इंसान को सकारात्मक दिशा में बदलने का प्रेरणा देते हैं।

4. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन में कैसा परिवर्तन हुआ जब उसने आलस्य छोड़कर कुछ काम किया?

उत्तर: बुढ़िया ने आलस्य छोड़कर कुछ काम किया तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हुआ, और उसे आराम और आत्म-समर्थन का अहसास हुआ।

5. प्रश्न: कविता में कौन-कौन सी भाषा का प्रयोग किया गया है और यह किस तरह से पढ़ने वाले को प्रभावित करता है?

उत्तर: कविता में साधारित और सामान्य भाषा का प्रयोग है, जो पढ़ने वाले को उस बुढ़िया के जीवन को सहजता से समझने में मदद करता है और उससे जुड़े भावनात्मक अनुभव को साझा करता है।

सात अंक के प्रश्न और उत्तर

1. प्रश्न: बुढ़िया ने अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में कैसे बदला और उसे कैसे समृद्धि हुई?

उत्तर: बुढ़िया ने अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए काम करना शुरू किया और उसने खुद को समृद्धि और सम्मान से भरा महसूस किया। उसने आलस्य और असहींसा को छोड़कर आत्म-समर्थन की दिशा में कदम बढ़ाया, जिससे उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हुआ।

2. प्रश्न: बुढ़िया की ज़िंदगी में हुए सकारात्मक परिवर्तन ने उसके दैहिक और मानसिक स्वास्थ्य में कैसे सुधार किया?

उत्तर: बुढ़िया ने मेहनत करना शुरू करके अपने दैहिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार किया। उसने आलस्य छोड़ने के बाद उसकी ऊर्जा बढ़ी और उसने खुद को सकारात्मक और स्वतंत्र महसूस किया।

3. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन में हुए बदलाव ने समाज में उसका स्थान कैसे बदला?

उत्तर: बुढ़िया के जीवन में हुए सकारात्मक परिवर्तन ने उसका समाज में स्थान बदल दिया। उसे समाज में सम्मान और स्थान मिला, जिससे उसका सामाजिक और आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।

4. प्रश्न: बुढ़िया के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या था?

उत्तर: बुढ़िया के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारण उसकी मेहनत, आत्म-समर्थन, और आत्म-निर्भरता थी। उसने अपने कठिनाईयों का सामना करके उन्हें पार करने के लिए जुट जारी रख

कविता का सारांश

कविता 'एक बुढ़िया' के रचयिता निरंकारदेव 'सेवक' हैं। इस कविता में कवि ने एक ऐसी बुढ़िया के बारे में बताया है, जिसके पास कोई काम न था। वह दिनभर खाली रहती और कोई काम नहीं करती थी। काम रहने के कारण वह दिनभर बैठी रहती और थक जाती थी। इसलिए उसे आराम भी नहीं था। काम न रहने के कारण उसके लिए सुबह, दोपहर, शाम और रात सब बराबर थे।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता 'एक बुढ़िया' से ली गई हैं। इसके रचयिता निरंकार देव 'सेवक' हैं। इसमें कवि ने बिना काम न करने वाली एक बुढ़िया का वर्णन किया है।

व्याख्या: किसी स्थान पर एक बुढ़िया रहती थी। वह दिनभर घर में यूँ ही बैठी रहती थी। उसके पास करने के लिए कुछ भी नहीं था।

प्रसंग: पूर्ववत्।

व्याख्या: बुढ़िया के पास कोई काम नहीं था, इसलिए वह हमेशा बेचैन रहती थी। इसलिए उसे आराम नहीं था। कोई काम रहने के कारण उसके लिए सुबह, दोपहर, शाम और रात सब बराबर थे।